B.A. Part III Pol.Sc Paper 6th

रूसो का महत्व
(Importance of Rousseau)

रूसो को अपने समकालीन विचारकों से निन्दा अधिक और प्रशंसा कम प्राप्त हुई, किन्तु समय बीतने के साथ-साथ रूसो का महत्व स्पष्ट होने लगा। प्रो० डनिंग ने बहुत ही संयमित रूप से रूसो की प्रशंसा की है। प्रो० कोल ने तो रूसो की प्रशंसा करते हुए यहाँ तक कह डाला कि "सामाजिक समझौता राजनीतिक दर्शन पर एक महानतम ग्रन्थ है, और सदा से भरी हुई स्थायी मूल्य की एक कृति है।" राजनीतिक दर्शन पर रूसो के प्रभाव के संबंध में 'कोल' ने कहा है कि "यह कहना भूल है कि वह मृतप्राय है, इसके विपरीत वह दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। जैसे ही नवीन संततियाँ उसकी कृतियों का अध्ययन करने लगेंगी, उनकी स्थायी मूल की धारणाएँ नवीन राजनीतिक दर्शन का आधार बनेगी", इस प्रकार राजनीतिक दर्शन को रूसो ने अनेक महत्वपूर्ण देन दी है।

रूसो के सामान्य इच्छा का सिद्धान्त :— राजनीतिक दर्शन में सामान्य इच्छा के सिद्धान्त का आविष्कार रूसो ने ही किया है। सामान्य इच्छा का सिद्धान्त कितना ही अस्पष्ट क्यों न हो तथा व्यक्ति की आदर्श इच्छा और यथार्थ इच्छा में भेद करना एवं एक विशेष स्थिति में सामान्य इच्छा का पता लगाना चाहे कितना ही कठिन क्यों न हो इसमें संदेह नहीं कि जो चीज समाज को संभव बनाती है, वह सामान्य इच्छा ही है। जिसे हम सामान्य उद्देश्यों की सामान्य चेतना भी कह सकते हैं। रूसो के राजनीतिक दर्शन में सामान्य इच्छा विषयक सिद्धान्त एक लोकतांत्रिक आदर्श प्रस्तुत करता है।

लोकप्रिय सम्प्रभुता की धारणा :— रूसो का एक और महत्वपूर्ण देन लोकप्रिय सम्प्रभुता की धारणा है जिसे वर्तमान समय की प्रजातंत्रात्मक व्यवस्था का मूल आधार कहा जा सकता है। रूसो के पहले राजनीतिक विचारकों में बोदाँ तथा हॉब्स जैसे विचारकों ने सम्प्रभुता के सिद्धान्त में योग दिया है, किन्तु इनमें से किसी ने भी इसका प्रयोग व्यक्ति की स्वतंत्रता का समर्थन करने के लिए नहीं किया। किन्तु रूसो ने

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

संप्रभुता को सामान्य इच्छा में निहित करके लोकप्रिय संप्रभुता के सिद्धान्त का शिलान्यास किया। उसने अपने पूर्व के राजनीतिक विचारकों की अपेक्षा इस बात पर अधिक बल दिया है कि जनता ही समस्त राजनीतिक सत्ता की मूल स्रोत है, प्रभुसत्ता जनता की सामान्य इच्छा में निहित है सरकार सर्वोच्च सत्ता रखने वाली जनता की सेवक मात्र है।

रूसो लोकप्रिय संप्रभुता को सुरक्षित रखने के लिए भी जागरूक है, इसके लिए जनसभाएँ, लोकनिर्णय आरम्भण आदि लोकतंत्रीय संस्थाओं को अपनाने का सुझाव देता है। रूसो के द्वारा दिए गये सुझाव उसकी महान राजनीतिक दूरदर्शिता को दर्शाता है।

व्यक्ति और राज्य में स्वरूप संबंधों का प्रतिपादन :— रूसो की एक महत्वपूर्ण देन व्यक्ति और राज्य के संबंधों को श्रेष्ठ आधार पर प्रतिष्ठित करता है। अरस्तु के इस विचार के आधार पर कि "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा उसके नैतिक स्वरूप का विकास केवल समाज में ही हो सकता है"। रूसो ने राज्य और व्यक्ति के संबंधों को नैतिक स्वरूप प्रदान किया तथा व्यक्ति की राज्य के प्रति भक्ति का सुदृढ़ आधार स्थापित किया। इस प्रकार इसने राज्य की एकता सार्वभौम प्रकृति एवं श्रेष्ठता पर अपरिमित बल दिया है।

राज्य और सरकार में स्पष्ट प्रतिपादन :— रूसो ने राज्य तथा सरकार का अन्तर जितने स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है, वैसा किसी अन्य तत्कालीन विचारक में नहीं मिलता। उसने विधियों तथा विधि शासन की श्रेष्ठता प्रतिपादित की जन कल्याणकारी विधियों के निर्माण को प्रोत्साहित किया तथा संवैधानिक विधियों के विकास में योगदान दिया।

राष्ट्रीयता की भावना का प्रतिपादन :— राष्ट्रीयता की भावना को भी रूसो से बहुत प्रेरणा मिली यद्यपि वह राष्ट्रीय राज्य की धारणा का समर्थक नहीं था, परन्तु उसने राज्य की एकता व अखण्डता की भावना का समर्थन कर राष्ट्रभक्ति का आदर्श प्रस्तुत किया। सेबाइन के अनुसार

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

"रूसो एक राष्ट्रवादी न होते हुए भी रूसो ने नागरिकता के प्राचीन आदर्श को एक ऐसा स्वरूप प्रदान करने में सहायता की जिससे की राष्ट्रीय भावना उसे अपना सकी"।

आधुनिक संविधानवाद का संकेत :— रूसो ने जनता द्वारा निर्मित कानूनों और सरकार द्वारा जारी किए गये कार्यपालिका आदेशों में जो भेद किया है, वह लगभग वैसा ही है, जैसा भेद आज संविधान या संवैधानिक कानूनों और अवस्थापिका द्वारा निर्मित साधारण कानूनों में देखा जाता है। रूसो के द्वारा किया गया भेद आधुनिक संविधानवाद का आधार है, इससे रूसो के राजनीतिक दूरदर्शिता का परिचय मिलता है।

रूसो का महत्व इस बात में भी है कि उसमें वर्तमान काल की सभी प्रमुख विचारधाराओं, समाजवाद अधिनायकवाद तथा लोकतंत्र के बीज मिलते हैं। जर्मन और ब्रिटिश आदर्शवाद का तो वह अग्रदूत है ही, दार्शनिक अराजकतावाद (Philosphical Anarchism) समाजवाद, संघवाद अनेक विचारधाराओं का वह प्रेरणा स्रोत है। "अर्नेस्ट रिज" (Earnest Ridge) ने उसे मध्य युग के परम्परागत सिद्धान्त के साथ राज्य के आधुनिक दर्शन को सम्बद्ध रखने वाला बताया है। इसी प्रकार 'वेपर' ने कहा है कि "रूसो ने अपनी सबल प्रतिभा की छाप राजनीति, शिक्षा, धर्म तथा साहित्य पर छोड़ी"। लैन्सन के इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि "उसे आधुनिक युग को लाने वाले समस्त मार्गों के द्वार पर खड़ा हुआ पाते हैं।"

इन सबके अतिरिक्त रूसो एक क्रान्तिकारी विचारक था और भविष्य की राजनीति तथा जनजीवन पर रूसो का विलक्षण प्रभाव पड़ा। उसने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में तत्कालीन दूषित शासन पद्धति और सामाजिक अवस्था पर प्रबल आक्षेप किया तथा शोषण और आर्थिक विषमता के भीषण दुष्परिणामों का नग्न चित्र प्रस्तुत करते हुए जनता में विद्यमान अवस्था में आमूल परिवर्तन करने की तीव्र भावना भर दी। उसके इन विचारों का प्रभाव 1789 के फ्रांस की राज्य क्रान्ति के रूप में प्रकट हुआ, फ्रांसीसी क्रान्ति के नेताओं में

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(५)

सबसे अधिक नेपोलियन रोबोस्पियर पर रूसो के रचनाओं का गहरा प्रभाव था। क्रान्ति के मूलमंत्र स्वतंत्रता, समानता तथा भ्रातृत्व की शिक्षा-दीक्षा देने वाला गुरु रूसो ही था। अमेरिकन राज्यों ने भी अपने देश के संविधान निर्माण में भी रूसो के विचारों का अनुसरण किया, एक क्रान्तिकारी विचारक के रूप में मानव जाति पर रूसो का अधिक प्रभाव रहा है। राजनीति चिन्तन के क्षेत्र में रूसो की रचनाओं का महत्व अधिक है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner